नेराज की कहानी की किताबों से दोस्ती

नेराज देवी पुत्री श्री हरजीराम अभी कक्षा 2 मे पढ़ती हैं और नवां गांव में अपने दादाजी के साथ खेत में रहती हैं। उसके दादाजी अन्धे हैं। नेराज के परिवार में मां,तीन बहिने और एक छोटा भाई है।नेराज के पिताजी की मृत्यु हो गयी । पिताजी मजदूरी करने के लिए पास के गांव मेहगांव में पत्थर की रोडी मशीन पर काम करने के लिए जाते थे। वहां पर उन्होने 4–5 साल काम किया था। फिर क्रेशर के धुआं से उन्हें हृदय रोग हो गया और धीरे–धीरे सांस लेना कठिन हो गया। नेराज का पापा बहुत ज्यादा बीमार हो गये। उन्होने बहुत दिनो तक दवाई ली। परन्तु दवाई से कोई फायदा नही हुआ और धीरे धीरे शरीर कमजोर होता गया और उनकी मृत्यु हो गयी ।

अब घर में कमाने वाले उसकी मां ही हैं। मां के पास घर का काम बहुत हैं। नेराज भी घर का काम करती हैं और स्कूल भी जाती हैं। स्कूल घर से लगभग दो किलोमीटर दूर हैं। नेराज दो किलोमीटर पैदल चलकर स्कूल आती हैं। पहले वह स्कूल में किसी बच्चें व टीचर से बातचीत नहीं करती थी और गुम सुम रहती थी। फिर धीरे–धीरे कक्षा की शिक्षण गतिविधियों को देखकर बच्चों के साथ गुलमिलने लगी। उसे कहानी की किताबों में बहुत रूचि है। वह किताब लेती हैं और इन पर टीचर के साथ बातचीत करती हैं। ।उसे कहानी सुनना बहुत अच्चा लगता हैं।

नेराज स्कूल से घर जाकर अपने बहन के साथ भैस व बकरीयों को चराने जंगल ले जाती हैं, और शाम को जब घर आती तो जलाने के लिए लकडीया लेकर आती, इससे भोजन पकाकर खाते हैं। जब से नेराज की कहानी की किताबों से दोस्ती हो गई हैं वह स्कूल नियमित आने लगी हैं।वह अपने आपसे किताब पढ़ने की कोशिश करती है और अब अटक अटक कर पढ़ने लगी हैं।

–मनोहरलाल